१.०

गोग्रास

अ.भा. कृषि गोसेवा संघ - गोपुरी - वर्धा.

अनुक्रमणिका

मुद्रक : र
प्रकाशक : ना
पत्र

अनुक्रमणिका

मुद्रक : र

प्रकाशक : ना

पत्र

गोग्रास

गोरक्षा अभियान पक्ष
विशेषांक

वर्ष १ : अंक १०
११ अगस्त ७७

गोपुरी, वर्धा

वार्षिक शुल्क ६ रु.
प्रति अंक ५० पैसे

* * *

गोरक्षण

इस निरीह प्राणी में करुणा के दर्शन होते हैं। वह करोडों भारतीयों की मां है। गोरक्षा का मतलब है, ईश्वर की सृष्टि के समस्त मूक प्राणियों की रक्षा।

गोरक्षा विश्व को हिंदू धर्म की देन है। और जब तक गोरक्षा करनेवाले हिंदू दुनिया में मौजूद हैं तब तक हिंदू धर्म भी जीवित रहेगा।

मैं उसकी पूजा करता हूं और सारी दुनिया के खिलाफ होने पर भी उसकी पूजा करता रहूंगा।

— महात्मा गांधी

* * *

गाय के दूध-घी का आग्रह रखें

(प्रधान मंत्री मोरारजी भाई का संदेश)

एकाध राज्य छोडकर आज देशभर में गोवध-बंदी का अमल हो रहा है। देश के विभिन्न जनसमुदाय गाय के दूध और घी के उपयोग के वारे में आग्रह रखें तो किसान और अन्य लोगों को गोपालन के लिए प्रोत्साहन मिलेगा और गोसंवर्धन का काम आसान वनेगा। कार्यकर्ता इस संवंध में लोगों को सच्ची बांत समझावेगा तो इस दिशा में शीघ्र प्रगति हो सकेगी और गोवंशवध-वंदी करवाने की बात को वेग मिलेगा।

गाय को अपने जीवन में व्यापक रूप से अपनायेंगे तभी सच्ची गोसेवा हो सकेगी। इस दिशा में सम्मेलन सक्रिय सुझाव देगा, एवं सम्मेलन में लिये गये निर्णय देश के अन्य राज्यों के लिए भी प्रेरणदायी वनेंगे, ऐसी आशा है।

इस प्रसंग पर गुजरात गोवध-बंदी समिति के कार्यकर्ताओं को मेरी ओर से शुभेच्छा भेज रहा हूं, और गुजरात गोसेवा सम्मेलन की सफलता चाहता हूं।

गोरक्षा मानवीय संस्कृति का प्रश्न

– आचार्य दादा धर्माधिकारी –

गोवंश हत्यावंदी के लिये जो प्रश्न खडा हुआ है उसका कारण है कि हमारी नजर वदल गयी है। हम जीवननिष्ठ नहीं रहे हैं, अर्थनिष्ठ बन गये हैं।

आज के अर्थशास्त्र को मार्क्स ने अनर्थशास्त्र कहा था। वह अब्र व्यर्थशास्त्र साबित हो रहा है, क्योंकि जीवननिष्ठा उसमें कम हो गई है।

गोरक्षा का प्रश्न सांप्रदायिक, धार्मिक माना जाता है। आज सबके लिये कुछ कहना हो तो अर्थ की भाषा में बोलना पडता है। पैसे के अलावा कोई भाषा सार्वभौम नहीं मानते। गाय के मसले को मूल्य की दृष्टि से सोचें, कीमत की नहीं।

मूल्य जो पैसों में नहीं आंका जाता। कीमत वह है, जो बाजार में पैसों में चलती है। जो ईश्वर को नहीं मानता उसे नास्तिक कहते हैं। मेरी व्याख्या दूसरी है, जो मूल्य नहीं मानता, कीमत जानता है वह नास्तिक है। मां के दूध की कीमत नहीं होती, मूल्य होता है। लेकिन गाय के दूध की कीमत होती है, आज के इस अर्थशास्त्र में कोई तमीज नहीं, कोई विवेक नहीं।

हमारे समाज में सबसे बडा मूल्य जीवन का है। उसमें सबसे बडा मूल्य मनुष्य का है। हम शेर को, सांप को भी बचाना चाहते हैं। युरोप में तो सांप को भी पालनेवाले है।

सवाल यह है जीवन की दृष्टि से, सांस्कृतिक दृष्टि से, मूल्य क्या है ? जिस दिन मनुष्य ने पशु को जीवन में स्थान दिया उस दिन से सांस्कृतिक क्षेत्र में आदमी का एक कदम आगे बढा। जो

पशु शौक या भोजन के लिये पाले जाते हैं उनका मैं यहां जिक्र नहीं कर रहा हूं। मनुष्य ने संकल्प किया कि मनुष्य के बाद अेक पशु को हम अवध्य मानेंगे। पहले मनुष्य को अवध्य माना।

लेकिन नागा जाति में एक समय ऐसा था, जो जितने ज्यादा मनुष्यों के सिर काटकर लायेगा उतना वह धार्मिक। क्या यह धर्म है? क्या यह संस्कृति है? क्या यह विकृति नहीं? गिरावट नहीं?

क्या गाय को मारना ही चाहिए, यह मुसलमान का धर्म है? मै ख्रिश्चन वना तो धार्मिक कर्तव्य करके मुझे गाय काटनी ही चाहिये, तभी ख्रिस्ती समझा जाऊंगा ऐसी बात है?

मनुष्य जाती ने गाय को अवध्य मानकर एक कदम आगे वढाया है। कृषि गोरक्षा वाणिज्यम्, यह सार्वभौम धर्म है। क्या यह किसी अेक धर्म की चीज है? हम सब दुकान में जाते हैं। हिंदू के दुकान का करेला मीठा होगा? या मुसलमान के दुकान का केला कडुवा होगा? इनके कडुवे या मीठेपन में धर्म के कारण कोई फरक हो जाता है?

यह सब मानवीय संस्कृति का संकल्प है। लेकिन इसको निभाया नहीं गया। जैनों के लिए युद्ध में मनुष्य अवध्य नहीं है। हिंदुओं का तो सवाल ही नहीं। गांधी ने और आगे होकर कहा, गाय के लिए मनुष्य को नहीं मारूंगा, लेकिन गाय को वचाने के लिए अपनी जान दे दूंगा। गांधी ने अपनी जान से भी ज्यादा मूल्य गाय को दिया।

पहले संकल्प आयेगा, वाद में व्यवस्था आयेगी। मनुष्य को नहीं मारेंगे यह संकल्प। लेकिन ऐसा संयोजन तो करना ही पडेगा की धरती पर पैर रखने के लिए जगह हो न रहे ऐसा न

हो। गाय अवध्य मानेंगे तो भी उसकी संख्या मर्यादा में रहे ऐसा प्लॅनिंग तो करना ही पडेगा।

आर्थिक संयोजन में कहेंगे कि कोई उपकरण आदमी की जगह न ले। कहते हैं उपकरण विज्ञान है, उपकरण विज्ञान नहीं है, विज्ञान का परिणाम है। क्या चश्मा वैज्ञानिक कहकर उसके बदले आंख निकाल देंगे? विमान वैज्ञानिक है तो क्या पैर अवैज्ञानिक है?

मनुष्य विज्ञान का गुलाम हुआ है। सृष्टि जीवन की विभूति नहीं रही। पशु उसके जीवन की विभूति नहीं रहे। संयोजन, वितरण की पद्धति, और उपकरण ऐसे हों जिससे मनुष्य की शक्ति, गुण, व्यक्तित्व का विकास हो। उसके बाद पशु का विनियोग हो। उसके बिना मनुष्य नहीं जीयेगा। पाश्चिमात्यों की दुनिया से पशु हट गये है। फ्रांस की लडकी यहां आयी तो वह चुहों को देख कर मुग्ध हो गई। सजीव सृष्टि का मनुष्य के जीवन के साथ गहरा अनुबंध है।

कहावत है, गायों के बीच रहकर आदमी बैल हो जाता है। तो यंत्र की सोबत से क्या होता होगा? क्या जीवन की कीमत देकर आदमी साधन-संपन्न होगा? संयोजन अर्थनिष्ठ नहीं, जीवननिष्ठ होना चाहिए। और जीवननिष्ठा में प्रथम मनुष्य का विकास होना चाहिए। शिक्षण, संयोजन का परस्पर अनुबंध रहे। उत्पादन में पशु का सहयोग हो। क्योंकि उत्पादन में जिसका उपयोग नहीं होगा उसे बचा नहीं सकेंगे। बुद्ध ने बकरे को बचाने की कोशिश की। हिंदू होशियार निकले। उन्होंने उसे यज्ञ का पशु बनाया, हिंसा नहीं उसकी मुक्ति होगी, उसे स्वर्ग मिलेगा ऐसा कहा।

तो इसका अर्थ यह है कि सांस्कृतिक भूमिका के लिए भी आर्थिक अधिष्ठान की जरूरत है। गाय सब पशुओं से अधिक उपयोगी पशु पाया गया। मानव की जरूरत और संस्कार, दोनों के लिए गाय जरूरी है। दूध का जिन्होंने विचार किया उन्होंने गाय को अपनाया।

हमारा देश दरिद्री है। मां-बाप को पालना भी कठिन है। इसलिए गांधीजी ने कहा गाय को परिवार में पालना कठिन होगा, गांव में गोसदन खोलकर गायें पाली जाय, याने गाय की जिम्मेवारी समूह उठाये, व्यक्ति नहीं। कुछ प्रदेशों में कानून नहीं बने है, जब कि घटना में निर्देश है। लोगों को डर है कि मुसलमान इसका विरोध करेंगे। मैं घटना समिति का सदस्य था। मेरे वगल में मुसलमान और ख्रिश्चन वैठे थे। घटना में गोवधबंदी के इस निर्देशन के बारे में किसीने एतराज नहीं उठाया था। कसाई गाय को काटता है, लेकिन कसाई को गाय वेचनेवाला गोपूजक ही होता है।

गोसेवा संघ को सूझबुझ से काम लेना चाहिए, ताकि मनुष्य की भावनाएं पत्थर जैसी न वन जाय। मैं कहना यह चाहता हूं कि गाय का प्रश्न मुख्यतया सांस्कृतिक प्रश्न है। केवल भारतीय ही नहीं, मानवीय संस्कृति का यह सवाल है।

(संसदीय अ. भा. कृषि-गोसेवा मंच की ओर से संसद-सदस्यों के सामने दिया गया भाषण, दिल्ली १९-७-७७)

गो-दुग्ध की विशेषता

राधाकृष्ण बजाज

१. भैंस के दूध के मुकाबले गाय का दूध माता के दूध के ज्यादा नजदीक है। अतः मनुष्यों के लिए गाय का दूध अधिक लाभदायी है, यह बात नीचे के तक्ते से मालूम होगी।

	पानी	प्रोटीन	स्नेह	शर्करा	खनिज	कुलघन पदार्थ
माता	८७.५८	२.०१	३.७४	६.३७	०.३०	१२.४२
गाय	८७.२७	३.३९	३.६८	४.९४	०.७२	१२.७३
भैंस	८१.९२	४.२५	७.५५	७.७५	०.८९	१८.८

२. कॅलशियम, सोडियम, पोटेशियम, कॉपर, जिंक और मँगनीज ये धातुएं सबके दूध में मिलती हैं, लेकिन लोहा, सल्फर, और आयोडिन ये केवल गायके दुध में ही मिलती हैं, भैंस के दूध में नहीं।

३. गाय के दूध में विटामिन अधिक होते हैं।

४. गाय के दूध में लेक्टोकोकस वोसिलिस जल्दी बढते है इस कारण गायका दूध सुपाच्य और स्फूर्तिदायक होता है। दही का जल्दी जमना इसका प्रमाण है। गाय के दूध का दही जल्दी जमता है।

५. भैंस के घी कें मुकाबले गाय के घी में आंख को ज्योति देनेवाला कॅरोटीन (carotene) दसगुना होता है। भैंस के घी में अपचनीय अंश ४४ प्रतिशत होता है जबकि गो-घृत में ३६% होता है और औषधि-गुण भी काफी मात्रा में होते है।

६. गाय की प्रकृति मनुष्य के प्रकृति से मिलती-जुलती होती है। गाय का बच्चा हमारी माताओं की तरह ९ महिने १० दिन

प्रधान मंत्री से भेंट

१९-७-१९७७

आदरणीय मोरारजीभाई,

आपकी सेवा में यह निवेदन सर्व सेवा संघ, अखिल भारत कृषि-गोसेवा संघ, भारत गो-सेवक समाज और संसदीय कृषि-गोसेवा मंच की ओर से प्रस्तुत किया जा रहा है। गाय भारतीय अर्थशास्त्र और संयोजन की रीढ है। उसकी उपयोगिता से उपकृत होकर भारतीय संस्कृति ने गाय (गोवंश) को समाज में आदर का स्थान दिया है। गोवंश का समुचित विकास किया जाय तो बेकारी निवारण की समस्या का भी काफी हद तक समाधान निकल सकेगा और सबसे गरीब मानव के विकास में गाय सहायक हो सकेगी। आप स्वयं गाय की इन सारी विशेषताओं से परिचित हैं। आपने अपने जीवन में भी गो उन्नति के सतत

में जन्मता है। जो औषधियां मनुष्य पर काम करती हैं वे ही औषधियाँ अधिक मात्रा में गाय पर लागू होती हैं। इस तरह मनुष्य-प्रकृति से गाय अधिक नजदीक होने के कारण मनुष्य के लिये गाय का घी-दूध अधिक लाभदायी होता है।

७. वस्तुस्थिति यह है कि जो गुण-दोष माताओं में होते है उनका असर दूध में होता है। फिर भले ही उनमें के कुछ गुण-दोष विज्ञान की पहचान में आवें या न आवें। सांड और गाय में चपलता, स्फूर्ति, तेज, बुद्धिमत्ता दिखती है। उससे उल्टे भैंस और भैंसे में जडता, स्थूलता, और बुद्धिहिनता दिखती है। इन गुणों का असर दूध में आये विना नहीं रह सकता।

("गो-सेवा की नीति" से)

प्रयत्नस्वरूप गाय के ही दूध, घी के इस्तेमाल का व्रत रखा है। आपको अधिक लिखने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी भारत सरकार एवं प्रदेश सरकारों से हमारी कुछ प्रमुख अपेक्षाएं हैं, जिन पर तुरन्त अमल होने की जरूरत है।

१– गाय की वरीयता

गोवंश से हमारे ३ काम सधते हैं : दूध, खेती जोत और खाद। जहां तक दूध का सवाल है, आज भैंस अधिक दूध देती है फिर भी विकास किया जाय तो दूध देने की क्षमता गाय में भैंस के मुकाबले बहुत अधिक है। खेती जोत की आवश्यकता बैल से ही पूरी हो सकती है। भैंसा बैल की पूर्ति नहीं कर सकता। ट्रैक्टर भी काफी वर्षों तक बैल की पूर्ति नहीं कर सकते, अतः गाय रखना हमारे लिए अनिवार्य है। जहां तक गोबर-गोमुत्र का सवाल है, कई औषधि गुणों में गाय का गोबर-गोमुत्र श्रेष्ठ माने गये हैं। हो सकता है खाद की दृष्टि से भी सेंद्रीय खादों में वह श्रेष्ठ हो। हमारी सांस्कृतिक परंपरा तो गाय के पक्ष में है ही।

आर्थिक एवं सांस्कृतिक, दोनों दृष्टियों से विचार करने के बाद यह देखा गया कि गोवंश का विकास राष्ट्र के लिये अपरिहार्य है। भारत सरकार से प्रार्थना है कि पशुपालन नीति में गाय की वरीयता को मान्यता प्रदान करें एवं विकास के सभी कार्यक्रमों में गाय को प्राथमिकता दी जाय।

२– गोवंश हत्याबंदी

भारतीय अर्थशास्त्र में गाय, बैल नदी सभी समान रूप से उपयोगी है एवम् भारतीय संस्कृति में सबका समान आदर है। अतः बैल सहित पूरे गोवंश की हत्या बंद होनी चाहिए। इसके

लिए आवश्यक है कि भारतीय संविधान में इस प्रकार संशोधन किया जाय, ताकि गो शब्द में गाय की संतति नर-मादा दोनों का समावेश हो जाय। आज के कानून में सुप्रीम कोर्ट के निर्णयानुसार बुढे बैल को संरक्षण नहीं है, वह भी मिलना चाहिए। गोवध बंदी याने गोवंश हत्याबंदी हो, ऐसा कानून सारे देश में बने ऐसी भारत सरकार से एवं प्रदेश सरकारों से संसदीय कृषि-गोसेवा मंच एवं अखिल भारत कृषि-गोसेवा संघ, सर्व सेवा संघ एवं भारत गोसेवक समाज की प्रार्थना है।

३. वचनपूर्ति

संत विनोबाजी को भारत सरकार ने पूरे भारत में गोवध-बंदी कानून बनवा देने का आश्वासन दिया था। उसके अनुसार काफी प्रदेशों में गोवध-बंदी कानून बन गये हैं। बंगाल और केरल के कानून ११ सितंबर १९७७ तक बन जाने की बात थी। हमें विश्वास है कि इस आश्वासन को पूरा किया जायेगा। गोवा सरकार भी सभी राज्यों की तरह गोवध-बंदी की बात मान्य करे ऐसी उससे भी प्रार्थना है।

४. कलकत्ते में मौजूदा गोवधबंदी कानून का तुरन्त सख्ती से अमल हो

भारत की सर्वोत्तम नसलों में हरियाणा नसल है। हरियाणा नसलों की बढिया से बढिया गायें कलकते में जाती हैं और एक ब्यात के बाद कसाई के पास पहुंच जाती हैं। उसकी संतान दूध के लोभ में पहले ही मार दी जाती है। दस-बीस साल में जनता एवं सरकार जितना गोसंवर्धन कर पाती है उससे कई गुना अधिक गायें कलकते में एक साल में मार दी जाती है। वहां के मौजूदा कानून का सख्ती से अमल किया जाय तो भी १४ साल

से नीचे की गायें बच सकती हैं। प्रदेश सरकारें कलकते में गायें जाने पर रोक लगा सके ऐसी व्यवस्था हो। सूखने पर गायों को कलकत्ते से अन्य प्रदेशों में वापिस भेजने का रेल्वे फ्रेट फ्री कर दे तो भी हजारों गायें बच सकती हैं। देश के इस अमुल्य गोधन और उसकी संतानों को बचाने में भारत सरकार एवं बंगाल सरकार को पूरी शक्ति लगानी चाहिए।

५. दूध के भावों में गाय का शोषण बंद हो एवं प्रोत्साहन मिले

महाराष्ट्र छोडकर सारे भारत में सरकारी और बिन-सरकारी डेयरियों में दूध खरेदी के भाव घृतांश प्रतिशत पर निर्धारित है, जिसका परिणाम यह हो रहा है कि भैंस-दूध के मुकाबले गोदूध को ४० प्रतिशत से भी कम भाव मिल रहे हैं। भैंस के हिमायती पिछले तीस-चालीस वर्षों में गाय के मुकाबले भैंस के दूध को ड्योढे भाव देकर भैंस को तरजीह देते रहे और गायों को समाप्त कर दिया। भारत में जहां भी डेयरियां बढी वहां सभी जगह गाय का ऱ्हास हुआ है। दूध का मूल्यांकन पोषण की दृष्टि से होना चाहिए। भैंस के दूध में घृतांश अधिक है, तो गोदूध में सुपचनियता और अनेक औषधि गुण है, जो मानवस्वास्थ्य के लिए हितकर साबित हुए हैं। गाय को जिंदा रखना हो तो भैंस के शुद्ध दूध के बराबर गाय के शुद्ध दूध को भाव मिलने चाहिए।

पिछले तीन-चार वर्षों से महाराष्ट्र सरकार ने गाय के प्रति न्याय किया है। १५ प्रतिशत टोटल सालिडस का भैंस-दूध और १२ प्रतिशत टोटल सालिड्स के गोदूध को समान भाव दिया जा रहा है। उसका परिणाम यह हुआ कि वहां ३० प्रतिशत से भी अधिक गोदूध बढा है। यह आवश्यक है कि सारे भारत में

गाय का शोषण बंद हो और उसे भैंस के दूध के वरावर भाव मिले।

६. गोसंवर्धन

गोवंश की उन्नति के लिए आवश्यक है कि प्रजनन नीति सर्वांगीण हो। याने वछडी दुधारु हो और वछडे खेतीलायक उत्तम वैल बनें। आज राष्ट्र के लिए दूध की आवश्यकता तो है ही, लेकिन उससे भी अधिक आवश्यकता खेती के लिए बैलों की है। देश की प्रजनन (ब्रिडींग) नीति में बैल-शक्ति की उपेक्षा न हो, इसका स्पष्ट आदेश होना चाहिए।

भारत के किसान को औसत गाय चाहिए जो पर्याप्त दूध दे सके और उत्तम बैल दे, उसके खेत पर पनप सके, वीमारियों की शिकार कम हो और हर मौसम में काम दे।

७. मान्य नसलों का विकास अपग्रेडिंग या सिलेकटिव्ह ब्रीडींग से ही हो

आज विदेशी नसलों से क्रास ब्रीडींग बडे पैमाने पर चल रहा है और आगे वढने की हवा है। क्रास ब्रीडिंग से देश को निश्चय ही नुकसान पहुंचेगा ऐसे मानने वाले काफी गोसेवक हैं। अतः क्रास ब्रीडिंग के लिए कुछ मर्यादा होना आवश्यक है। वह मर्यादा यह हो कि भारत की मान्य नसलों पर क्रास ब्रीडिंग न किया जाय। हजारों वर्षों के थपेडे खाकर स्थानीय आवहवा में जो मान्य नसलों अव तक टिकी हैं उनका विकास अपग्रेडिंग या सिलेक्टिव्ह ब्रीडिंग से ही किया जावे, ताकि भारतीय नसलें बची रहें।

८. गोसदन : गोशाला गोबर गैस प्लांट

संपूर्ण गोवधवंदी के वाद यह आवश्यक हो जाता है कि कतल से वचे असहाय पशुओं के पालन की समुचित व्यवस्था हो।

इसी व्यवस्था के लिए, गो-सदनों की रचना है। गोसदनों के लिए आवश्यक भूमि, पानी एवं आंशिक आर्थिक सहयोग देना सरकार का काम होगा। मंडियों में चालू लागवागों को कानूनी बनाने में भी सरकार के सहयोग की जरूरत रहेगी। गाय के गोबर गोमुत्र का ठीक से उपयोग किया जाय तो ऊसर भूमि भी उपजाऊ बन सकती है। मरने के बाद चमडा, हड्डी, मांस का ठीक से उपयोग किया गया तो उससे भी कुछ आमदनी हो सकेगी। फिर भी गोसदनों को चलाने की मुख्य जिम्मेवारी ग्राम पंचायतों की होना चाहिए। वे ग्रामसभा एवं जन-सहयोग के आधार पर उन्हें चलावें। आज की चालू गोशाला, पिंजरापोलों को भी आवश्यक सहयोग दिया जाना चाहिए, उनका मुख्य काम असहाय पशुओं का पालन ही रहा है। अतः आज के भूमि सीलिंग कानून से भी उन्हें मुक्त रखा जाय। गोवर गैस प्लांट का लाभ सर्वमान्य हो गया है। उसके लिए सरकार स्वयं प्रचार कर रही है।

९. गोसेवा संस्थाओं को इन्कम टैक्स से मुक्ति

गोसेवा का काम राष्ट्र का बुनियादी काम है। जो संस्थाएं केवल सेवा के उद्देश्य से चलती हैं, ऐसी गोसेवा की समस्त संस्थाओं को खास तौर से गोसेवा संघटन, गोशाला, पिंजरापोल, गोसंवर्धन, रिसर्च आदि के लिए चलनेवाली संस्थाओं की एवं उन्हें दान देनेवाले दाताओं व उद्योगों को सेक्शन ३५ के अंतगत इन्कमटैक्स को शतप्रतिशत छूट दी जानी चाहिए। इन्कम टैक्स की इस विशेष छूट से दाताओं को दान देने को प्रोत्साहन रहेगा, उससे गोसेवा के काम आगे बढेंगे, एवं देश लाभान्वित होगा।

१०. पशुखाद्यों का संयोजन व निर्यात बंदी

पशुखाद्यों का प्लॅनिंग करना होगा। देश में जमीन कम है,

जनसंख्या अधिक है। अतः पशुओं के चारे-दाने के लिए व्यवस्थित संयोजन और प्रयोग होने चाहिए। सिंचाई, बिना सिंचाई, दोनों तरह की जमीनों से जंगलों में, पहाडों पर, रेतीली और ऊसर जमीनों में भी अनेक प्रकार के चारे हो सकते हैं। अनाज की फसलें भी ऐसी हों, जिनसे चारा भी पर्याप्त निकल सके। दाना इस प्रकार संतुलित बनाया जाय, ताकि कम से कम देने पर भी पूरा लाभ दे। विशेषज्ञ और गोपालक मिलकर प्रयोग करेंगे तो अधिक सफल हो सकेंगे। आज खली आदि पशुखाद्यों का विदेशों में निर्यात किया जाता है वह बंद होना चाहिए। पशुओं को खुराक देने से दूध के अलावा उन खाद्यों से भूमि के लिए उत्तम खाद भी मिलेगा।

आशा है, ऊपर के सुझावों पर आप विचार करेंगे। १ सितंबर १९७७ से ११ सितंबर तय आचार्य विनोबा जयंति के उपलक्ष्य में गोरक्षा अभियान पक्ष मनाना तय हुआ है।

निवेदक

१ सिद्धराज ढढ्ढा
अध्यक्ष – सर्व सेवा संघ

२ तुलसीदास विश्राम
उपाध्यक्ष – अ. भा. कृषि गोसेवा संघ

३ जयंतिलाल मानकर
अध्यक्ष – भारत गो सेवक समाज

४ श्रीमन्नारायण
अध्यक्ष – गांधी स्मारक निधि

५ रंगनाथ दिवाकर
अध्यक्ष – गांधी शांति प्रतिष्ठान

६ प्रो. शेरशिंह
संयोजक–संसदीय कृषि गोसेवा मंच

७ रतनकुमारी
संयोजक–ससदीय कृषि गोसेवा मंच

८ राधाकृष्ण बजाज
महामंत्री–कृषि गोसेवा संघ

यह निवेदन पढने के बाद प्रधान मंत्रीजी ने कहा–

श्री. मोरारजीभाईने प्रगट किए विचार

श्री मोरारजीभाईने प्रथम अपनी ओरसे आरंभ करते हुवे कहा कि गोपालन करना हो तो अपने जीवन में गोदूध – गोघृत के इस्तेमाल का आग्रह रखना चाहिये। गाय की वरीयता राष्ट्र मान्य होनी ही चाहिये। मैं तो चाहता हूं भारत में गाय ही गाय रहे। जबतक भैंस रहेगी देश का आलस्य और दरिद्रता का हरना कठिन है। पूर्ण गोवंश हत्याबंदी के लिये विधान में संशोधन करने से पहले यह आवश्यक है कि कतल से बची गायों के रक्षण की समुचित व्यवस्था हो। ताकि वे सडकोंपर या खेतों में भटकती न फिरें एवं भूखसे तडफकर न मरें। बंगाल, केरल, और गोवा में ता० ११ सितंबर १९७७ तक गोवध बंदी कानून बनवानेके लिये आप लोग प्रयत्न करें, मैं भी करुंगा।

डेअरिओं में गोदूध को भैंस दूध के बराबर भाव देने में कठिनाई होगी। गोदूध के उत्पादन का खर्च भैंस के मुकाबले कम आता है। उत्पादन खर्च के हिसाबसे भाव रखना ठीक होगा। सवा या ढयोढा फरक होगा असा मैं नहीं मानता फिर भी हो तो गलत है। गोसंवर्धन में दूध के साथ बैल भी अच्छे होने चाहिये। विदेशी क्रास ब्रीडिंग होना ही चाहिये यह जरुरी नहीं। हम लोग हर बात में पश्चिम का अनुकरण करते हैं। भारतीय नसलों से गोसुधार क्यों नहीं हो सकता? विदेशो ने भी शुरु में भारतीय नसले लेजाकर ही सुधार किया था। गोसदन, गोशाला इनकी व्यवस्था ठीक होनी चाहिये। केवल सरकार के भरोसे से काम नहीं चलेगा। गायको अपने पैरोंपर खडी करनी होगी। गाय स्वावलंबी बन सकती है यह दिखाना होगा। जो पशु खाद्यहमारी गायों के काम आसकता हों उन्हें विदेश भेजना गलत है। संक्षेपमें आप लोग यह समझे कि भारत से भैंस हटेगी तो सबसे अधिक खुषी होनेवालों में मेरा नाम पहिला होगा। *

हमारी ओर से विलंब नहीं होगा !

(राजस्थान के मुख्यमंत्री का आश्वासन)

मुख्यमंत्रीजी को दिया गया निवेदन

भाई श्री,

सेवा में निवेदन है कि देश के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास की दृष्टि से गोरक्षा– गोसंवर्धन का प्रश्न वहुत ही अहम है। राजस्थान के आर्थिक विकास में तो गोरक्षा – गोसंवर्धन का एक विशेष स्थान है। राजस्थान के सीमावर्ति जिलों में खेती से भी अधिक आमदनी गाय से होती है। पूरे राजस्थान के लिए गो विकास की दृष्टि से कुछ बुनियादी नीति तय करना आवश्यक है। इस दृष्टि से कुछ सुझाव नीचे दिये जा रहे है :–

१ गाय की वरीयता :– गाये से दूध और खेती जोत ये दो कार्य लिये जाते हैं। भैंस दूध दे सकती है लेकिन खेती के लिए आवश्यक बैल शक्ति नहीं दे सकती है। प्रदेश की दूध और खेती दोनों आवश्यकताओं को केवल गोवंश से ही पूरा किया जा सकता है। अलावा इसके गाय में दुध दायित्व शक्ति भी भैंस के मुकाबले वहुत अधिक है। एवं मानव स्वास्थ्य के लिए गो दुग्ध अधिक स्वास्थ्यकर है यह वाते भी सर्वमान्य हैं।

अतः प्रदेश की समस्त विकास योजनाओं में गाय की वरीयता मान्य की जानी चाहिए।

२ गो संवर्धन :– गो संवर्धन याने ब्रीडिंग नीति ऐसी होनी चाहिए ताकि बछडी अच्छी दुधारू हो और वछडे खेती लायक बैल वने। अर्थात सर्वांगीण नसल का विकास किया जाय। देश

की अधिकांश खेती बैल आधारित है। अत: बैल शक्ति को नजरअंदाज नहीं कर सकते।

३ क्रॉस ब्रीडिंग की मर्यादा :– आज विदेशी नसल से क्रॉस ब्रीडिंग वडे पैमाने पर चल रहा है और आगे बढनेवाला है। क्रॉस ब्रीडिंग से नुकसान ही होगा ऐसा माननेवाले भी काफी गोसेवक हैं। फिर भी देश की वढती हुई प्रगति में क्रॉस ब्रीडिंग को रोका नहीं जा सकता उसके लिए कोई मर्यादा बांधी जा सकती है। वह मर्यादा यह हो कि जो मान्य ब्रीड है उन्हें शुद्धरूप में कायम रखा जाय एवं उनका अपग्रेडिंग या सिलैकटिव्ह ब्रीडिंग किया जांय। जो नॉन डिस्क्रीप्ट (बिननसल की) गायें है उन पर क्रॉस ब्रीडिंग किया जाय। नॉनडिस्क्रीप्ट गायें ७५% होंगी। अत: क्रॉस ब्रीडिंग के लिए पूरा क्षेत्र रहेगा एवं देश की शुद्ध नसले भी सुरक्षित रह सकेंगी।

४ गोदुध के खरीद के भाव उचित एवं प्रेरक हों :– आज सारे भारत में तथा राजस्थान में डेरियों में दूध के खरीद भाव फेट परसेंटेज पर तय किये गये हैं। इसका परिणाम यह हो रहा है कि गोदूध को ४०% भाव कम मिलते हैं। आजकल नया सुझाव है कि टोटल सॉलीड्स पर भाव निर्धारण हो। उस पद्धति में गो दूध को २०% भाव कम मिलेंगे। दोनों ही पद्धतियों में गाय को जिंदा रहना कठिन है। गाय तभी भैंस के मुकाबले खडी रह सकती है जब गोदूध को भैंस दूध के बराबर भाव मिले। १५% टोटल सॉलीड्स का भैंस दूध और १२% टोटल सॉलीड्स का गोदूध दोनों को महाराष्ट्र सरकार समान भाव दे रही है। वही नीति राजस्थान को भी अपनानी चाहिए। तभी गाय आगे बढ सकेगी।

५ गोशाला, गोसदन, गोबर गैस प्लाँट :– सारे देश में संपूर्ण गोवंश हत्या बंद हो, ऐसे प्रयत्न चालू हैं। राजस्थान में तो सदैव से गोवध बंदी रही है। ऐसी स्थिति में असहाय गायों की रक्षा का साधन होना आवश्यक है। चालू गोशालाओं में तथा नये गोसदनों में ऐसे पशुओं की व्यवस्था होनी चाहिए। गोशालाओं एवं गोसदनों का विकास करने की दृष्टि से आवश्यक जमीन, पानी एवं आंशिक सहायता देने की सरकार की नीति होनी चाहिए।

६ पश्चिम राजस्थान में गोवंश की विशेष रक्षा :– राजस्थान के पश्चिमी भाग में बीकानेर, चूरू, जेसलमेर, वाडमेर आदि जिलों में प्रदेश का उत्तम गोधन वसा है। उसके विकास के लिए विशेष प्रयत्न होने चाहिए। अकालों के थपेडे भी उधर ही अधिक लगते हैं। उस क्षेत्र में विशेष ध्यान दिया जायगा तो उत्तमोत्तम गायें प्राप्त होने का वह एक वडा क्षेत्र हो सकता है। वह क्षेत्र भारत का डेनमार्क वन सकता है।

आशा है उपरोक्त सुझाओं पर सरकार गंभीरता से विचार करेगी।

मुख्यमंत्री ने जवाव में कहा कि आपके सुझाव ठीक है। इस काम में हमारी ओर से विलंव नही होगा।
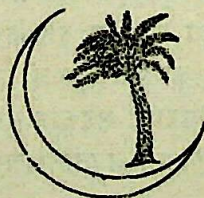
(उत्तम पूनी के अभाव में)

क्षय से पीडित खादी

आज पचास साल से खादी का कार्य हम कर रहे हैं। पू. विनोबाजी के मार्गदर्शन में पिंजाई, कताई, बुनाई तक की सारी प्रक्रियाएं अपने हाथों से की है। करीब ५० साल से नित्य कताई चलती है। भारत की सभी प्रमुख खादी संस्थाओं से संबंध रहा है। खादी कमीशन, प्रमाणपत्र समिति, सर्व सेवा संघ, खादी समिति, भारतीय खादी-ग्रामोद्योग संघ की सभाओं में उपस्थित रहने का मौका मिला है। अनेक वर्षों से अपना विचार प्रगट करते रहा हूं। इतने अनुभव के वाद यह देखता हूं कि खादी की प्रगति में उत्तम पूनी का अभाव यह एक वडा भारी क्षय रोग लगा है। इस क्षय के दूर हुए विना खादी का पनपना संभव नहीं।

पारंपारिक चरखा तथा अंवर चरखे की जो पूनियां वनती हैं, भंडारों से मिलती हैं उनमें विशेष रूप से तीन दोष रहते हैं। कचरा, कच्चे तंतू और असमान धुनाई, कचरा पूरा न निकलने के कारण कताई के समय सूत वार-वार टूटता है। सूत अनेक जोडों वाला हो जाता है और वह बुनाई में भी टूटता है। परिणाम यह होता है कि कताई की गति कम हो जाती है और वुनाई की गति भी कम हो जाती है। अर्थात् कतवारी और बुनकर, दोनों को मजदूरी कम मिलती है।

दूसरा दोष कच्चे तंतू का है। रूई के अधप के तंतू पूनियों में रह जाने के कारण उनका वना सूत कमजोर होता है। वह कताई-बुनाई में दिक्कत देता ही है। कपडा तयार होने के वाद

भी कच्चे तंतू के स्थान पर कपडा फट जाता है। खादी में जो छेद-छेदसे होते हैं वे इन्हीं कच्चे तंतुओं के कारण होते हैं।

खादी-विशेषज्ञों को चाहिये कि वे इस बिमारी का इलाज जैसे भी ठीक समझें तुरंत करें। खादी की छाती से क्षय की बिमारी को हटावें। खादी-जगत् ठीक समझे तो इस विमारी के लिये क्रांतिकारी रास्ता अपना सकता है। हमारा सुझाव है कि केंद्रीकरण के भूत का डर छोडकर मिलों में जो पूनी प्लँट हैं उनमें पिंजवाना आरंभ कर दिया जाय। आज भी खादी की घुलाई, रंगाई-छपाई मिल प्लँट में कराते ही हैं। विवेकपूर्वक इतना साहस करेंगे तो उत्तम पूनियां वनने लगेंगी।

१) कतवारी को कातने में आनंद आवेगा। उसकी गति वढ जायगी और मजदूरी भी अधिक मिलने लगेगी।
२) बुनकर की वुनाई अखंड होगी। उसे मजदूरी अधिक मिलने लगेगी और वुनकरों का अभाव भी कम हो जायगा।
३) ग्राहकों को उसी दाम में उत्तम मजबूत खादी मिलने लगेगी। खादी में छेद-छेद नहीं होंगे।
४) खाली पडे चरखे चलने लगेंगे, खादी का उत्पादन बढेगा, संस्थाओं के व्यवस्था-खर्च का प्रतिशत भी नीचे आ जायेगा।

एक मित्र का सुझाव है कि मिल के पिंजाई प्लँट की तरह के छोटे प्लँट वनवाकर जिले में खादी-संस्थाओं के मार्फत चलें तो क्या हर्ज है? जरा भी हर्ज नहीं है. वल्कि वह स्थिति अधिक अच्छी होगी। लेकिन उनके वनने में समय लगेगा। तव तक देश की प्रगति को रोकना उचित नहीं। हम आशा करें कि खादी-जगत् उत्तम पूनी देने के इस प्रस्ताव का गहराई से विचार करेगा।

राधाकृष्ण बजाज

रचनात्मक कार्यकर्ता संमेलन के विशेष निर्णय

केंद्रीय गांधी स्मारक निधी के तत्ववधान में अखिल भारत रचनात्मक कार्यकर्ता सम्मेलन दिनांक १७-१८-१९ जुलाई को नई दिल्ली में संपन्न हुआ। उसमें लिये गये विशेष निर्णय –

(१) देशमें फैली रचनात्मक संस्थाओं और कार्यकर्ता शक्ति का ध्यान इस ओर आकर्षित करना सामयिक, उचित और आवश्यक लगता है कि रचनात्मक कार्यक्रम के पीछे गांधी की भावना या दृष्टि मात्र सेवा, कल्याण या राहत कार्य करने की नहीं थी। इनके द्वारा वे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और नैतिक सब क्षेत्रों में क्रांतिकारी बुनियादी परिवर्तन लाने की कल्पना रखते थें। सत्य उनका आधार था और इसीलिए उनकी सारी प्रक्रिया अहिंसक थी। समाज को इसी रीति से तत्पर करने, बहुमुखी लोक शक्ति को इस तरह जागृत, संगठित, प्रशिक्षित और सक्रिय करने का अद्‌भूत नेतृत्व उन्होंने दिया था। आज जो रचनात्मक कार्यक्रम में व्यवसायीकरण बढ गया है, राहत और सेवा कार्य रूप में जैसा वह चल रहा है, उसमें परिवर्तन लाने की नितान्त आवश्यकता है। ताकि नई परिस्थितियों में यह संस्थायें अपनी भूमिका ठीक बना सकें और अपना दायित्व निभा सकें। तब ही लोगों में स्वावलंबन और आत्मविश्वास की

भावना पुनः जाग सकेगी और युवा शक्ति भी इस ओर आकर्षित होगी ।

(२) रचनात्मक संस्थाओं के कामों में समन्वय होने और सहकार तथा समग-दृष्टि के बढने की भी आवश्यकता है । खादी, गोसेवा, हरिजनसेवा, नशाबंदी आदि की संस्थाएं अपने मर्यादित कार्यों में अधिक शक्ति लगायें किन्तु अपने क्षेत्र को अन्य रचनात्मक प्रवृत्तियों में भी उनका सहकार हो । क्षेत्र की सारी रचनात्मक संस्थाएं व कार्यकर्ता एक-दूसरे के पूरक बनें ।

(३) रचनात्मक संस्थाओं को अपने अंगीकृत काम के साथ राष्ट्रीय एकता, सर्व धर्म समभाव और नैतिक जीवन बनाने के बुनियादी कार्यों को सातत्य से करते ही रहना है । इसमें संस्था प्राणवान होगी और उसके कार्यकर्ताओं की क्षमता तथा प्रतिष्ठा भी बढेगी ।

(४) संस्थाएं अपने निर्धारित कार्यक्रम के साथ ऐसे एक या दो कार्य भी हाथ में लें जो राष्ट्रीय स्तर पर जनहित की दृष्टि से उपयोगी हों । क्षेत्र में सरकार तथा जनता दोनों के लिए जिनकी अनिवार्यता और आवश्यकता महसूस की जाती हो । ये कार्यक्रम हो सकते हैं पीने का पानी उपलब्ध कराना, शराब बंदी, अस्पृश्यता निवारण, सफाई या स्वच्छता, बेरोजगारी निवारण, लोकतांत्रिक जनशिक्षण । इनमें भी पीने का पानी, शराब बंदी तथा बेरोजगारी निवारण के कार्यक्रम को प्राथमिकता दी जाये ।

(५) रचनात्मक संस्थाओं की अपनी आंतरिक सारी व्यवस्था और संस्था के अपने कार्यकर्ता वर्ग के परस्पर व्यवहार आदि में गांधी के अहिंसक समाज की झलक होनी चाहिए । वेतन-स्तर, साधन-सुविधा आदि में अधिकतम समानता लाई जानी चाहिए और भाईचारा, संयम, अनुशासन के आधार पर

व्यक्ति की क्षमता और उसके काम का मापन होना चाहिए।

संस्था के कार्यकर्ता अपने दैनंदिन जीवन में नियमित श्रम, स्वाध्याय, सादगी और जनसंपर्क को स्थान दें। संस्था की व्यवस्था में सब कार्यकर्ताओं का हिस्सा हो।

(६) अन्याय या बुराई के प्रतिकार के लिए गांधीजी ने समझाना, पिकेटिंग, असहकार, बहिष्कार, सत्याग्रह आदि कई रास्तें बताये हैं जिनका क्रमशः या विवेक से इस्तेमाल करना होता हैं। अन्याय या बुराई का प्रतिकार करनेवालों कों सामनेवाले कों चोट न पहूंचे और साथ साथ त्याग आत्मबलिदान और अहिंसक वृत्तीं रखनें की जरूरत होती है। सामनेवाले के हृदय परिवर्तन में विश्वास होना यह अहम् महत्व की बात है।

(७) समय का संकेत, जागतिक जिज्ञासा और भविष्यगर्भी आज की आशा आकांक्षा तथा आवश्यकता है कि गांधी व्यक्ति और विचार को रचनात्मक संस्थाओं द्वारा राष्ट्रीय परिधि में बांधे रखने की कोशिश न की जाय।

स्मरण रहे कि गांधी विचार और गांधी नीति किसी एक क्षेत्र या राष्ट्र के लिए नहीं है। उसका क्षेत्र तो अखिल मानव समाज है। रचनात्मक संस्थाओं को चाहिए कि उस विचार और नीति की सार्वभौमता को किसी प्रकार क्षति न पहुंचे।

उत्तम हरा चारा - कू - बबूल

कू-बबुल यह खुश्क और सारयुक्त जमीन में भी बारामाही हरा चारा देनेवाला द्विदलीय जाति का बढिया पौधा है। इसकी जडें जमीन में गहरी जाती है और साधारण सिंचाई से भी यह अच्छा बढता है। सालभर इसकी पत्तियां और कोमल टहनियों से हरा चारा मिलता है। दससाल तक यह पौधा काम दे सकता है। इसकी पैदाईश मेक्सिको और मध्य अमरीका में हुई है।

१. जमीन और वातावरण

विविध प्रकार का वातावरण और विविध प्रकार की जमीन में यह पनप सकता है। इसकी जडें जमीन में गहरी जमने के लिए सालभर तक बीच-बीच में सिंचाई की आवश्यकता रहती है। बोने के पहले एक-बार जमीन की हल से गहरी जुताई करनी चाहिए।

२. खाद और उर्वरक

पांच गाडी खाद (F. Y. M.) जमीन में मिला दे। १६ किलो P2 O5 और १० किलो नैट्रोजन फी एकड एक साल के लिए काफी है।

३. बीज की ट्रीटमेंट

बीज का छिलका मोटा और कठिन होने से ८० ।C (याने कुनकुने) गरम पानी में बोने के पूर्व बीज को ३-४ मिनिट रखना चाहिए।

४. बुवाई

७"×५" के प्लॅस्टिक की थैलियों में दो या तीन अच्छे बीज बो दें। इन थैलियों में २ भाग मिट्टी और १ भाग खाद (F. Y. M.) इस परिमाण में मिलाकर थैलियों में भर दें। बीज अंकुरित होने तक हर दिन थैलियों में पानी डालें। बीज उगने के बाद हर दो दिन बाद पानी डालते रहिये।

४. अ. पौधों को लगाना

जहां पानी की कमी हो वहां यह ऊपर बताई पद्धति अपनायी जाती

है। पौधे अंकुरित होने के ४० दिन के बाद अच्छे पौधों को (१५०×३० सेंटिमिटर) ५×१ फीट फासला रखकर बारीश के समय लगावे। बारीश होने पर आवश्यकता हो तो सिंचाई करे।

४. आ. टोंकन पद्धति

मान्सून की दो बार अछी बारीश हो जाने पर ६ इंच की दूरी पर बीज लगा दें। दो कतारों के बीच का अंतर (एक से डेढ मिटर) ३।। से ५ फीट तक हो। बीज (डेढ सेंटिमिटर) आधा इंच गहरे बोवें। बारिश न हुई तो पानी दिया जाय। आठ-दस दिन के भीतर बीज में अंकुर निकलने लगेंगे। दो पौधे के बीच का और दो कतारों के बीच का अंतर जमीन की उर्वरा शक्ति देखकर थोडा कमज्यादा करना चाहिये। जमीन की रचना, खाद और पानी देने का इंतजाम इसका भी इस बात में ख्याल रखा जाय।

जहां जमीन ढालू है, पहाडियां हैं वहां कंटूर लाइन निकालकर पौधे लगाने चाहिये।

५. आंतरमशागत और सारसंभाल

प्रारंभ में यह पौधा बहुत मंद गतिसे बढता है। दो या तीन बार हाथ से इसकी निंदाई करें। दो माह के बाद नीचे के हिस्सेवाली छोटी टहनियां और पत्तों की कटिंग करें।

६. पौधा स्थिर हो जाना

हलकी जमीन और साधारण बारिश वाले हिस्सों में यह पौधा जमने में २५० दिन लगते हैं। और जमीन अच्छी रही और सिंचाई का इंतजाम रहा तो १५० दिनों में यह पौधा कटाई के लिए तैयार मिलता है।

पौधा (डेढ या दो मीटर) ५-६ फीट ऊंचा बढ जाने पर पहली कटिंग (७५ सेंटिमिटर) २।। फीट के ऊपर से की जाय। फिर बाद में ३५ या ४० दिनों के बाद नाजुक टहनियों और पत्तों की कटिंग करते जाय। बहुत जाडे के दिनों में कटिंग ५० दिनों के बाद करें।

ठंडकाल में हर ३० दिन में एक बार और गरमी के दिनों में हर १०-२० दिन के बाद सिंचाई करने से नियमित ढंग से और अच्छा हरा चारा मिलता है।

७. खाद्य मूल्य

पारंपारिक और अपारंपारिक सूखे खाद्य घासों का प्रतिशत अध्ययन नीचे दिया जाता है।

नं.	फसल का नाम	C. P.	TDN	DCP	E E	NDF	ADF	Hemi-cell	Cellu-lose	Lig-ni	Ash	Fibre
1	कू·बबूल	28.1	60 00	20 00	2.72	48 01	37.16	11.84	28.02	9.79	11.72	17.80
2	हेज-ल्यूसर्ज	2[illegible].31	--	--	2.61	43. 7	38.34	5.63	21.55	16.23	10.72	24.30
3	ल्यूसर्न	16.18	60.00	13 00	3.2	50.50	25.20	25.30	29.20	9.70	10.11	25.00
4	मक्का	7.92	[illegible]5.00	5.0	1.10	--	--	--	--	--	11.33	24.57

गोवधबंदी के लिये प्रयास

गतवर्ष पू० विनोवाजी के उपवास के निमित्त भारत सरकार ने सारे भारत में गोवध वंदी कानून वनवा देने का आश्वासन दिया था। केरल, बंगाल और गोवा के लिये अेक साल का समय मांगा था। अेक साल का समय ११ सितंबर ७७ विनोवा जयंति के दिन पूरा हो रहा है। तबतक इन तीनों प्रदेशों में गोवध बंदी कानून बन जाय यह हमारा प्रयास है। सर्व प्रथम प्रधानमंत्री श्री मोरारजीभाई को ता. १८ अप्रैल ७७ को मिले थे। उसी दिन गृहमंत्री चौधरी चरणसिंगजी से भी में और डॉ. श्रीमन्नारायणजी मिले थें। दोनों ने आश्वासन दिया था

---

८. उत्पादन

ठीक देखभाल होने पर हर साल फी एकड में से २० से २५ टन तक हरा चारा मिल जाता है।

९. उत्पादन-क्षमता

सामान्यतया यह पौधा सालभर में एक एकड में २० टन (५०० मन) हरा चारा देता है, जिसमें से १५०० किलो क्रुड प्रोटीन या ११०० किलो सुपाच्य क्रूड प्रोटीन और ३४०० किलो कुल पाचक तत्व मिलेंगे। इसके साथ चार या पांच टन प्रतिवर्ष सूखे चारे की पूर्ति की जाय तो तीन दुधारू मवेशियों को पालना संभव होगा, जिसे प्रतिदिन लगभग छह लिटर दूध मिलेगा। परंतु अधिक दूध देने की क्षमतावाले मवेशियों के लिए खली-दाने का भी इस्तेमाल करना होगा।

इस संवंध में समग्र प्रयोग चल रहे हैं। उनकी जानकारी के लिये भारतीय कृषि-औद्योगिक प्रतिष्ठान अुरुलीकांचन, जिला पुणें (महाराष्ट्र) से संपर्क कर सकते हैं या यहां वर्धा लिख सकते हैं।

अुरुली कांचन (पुणें) — सुरेश देशमुख एम्. एस्सी. (कृषि)
१६-६-७७ रिसर्च ऑफिसर

कि गोवधबंदी के संबंध में प्रयास करेंगे, लेकिन अभी सरकारों की घडी बैठनी है। दो तीन महिनों का समय लगेगा।

प्रदेश सरकारों के चुनाव हो जाने के वाद हाल ही मैं ता. १९ जुलै ७७ को सर्व सेवा संघ, कृषि गोसेवा संघ, भारत गोसेवक समाज और संसदीय कृषि गोसेवा मंच इन चारों की ओरसे दस लोगों का अेक प्रतिनिधि मंडल डॉ. श्रीमन्नारायणजी के नेतृत्व में प्रधानमंत्रीजी से मिला था। प्रधानमंत्रीजी ने आश्वासन दिया कि आप लोग प्रयत्न करें वे भी लिखेंगे। कृषि मंत्री श्री वर्नालाजी से भी प्रतिनिधि मंडल भारत गोसेवक समाज के अध्यक्षय श्री० जयंतिलाल मानकरजी के नेतृत्व में मिला। श्री वर्नालाजीने भी आश्वासन दिया कि वे तीनों प्रदेश-सरकारों को लिखेंगे। ता. २१ जुलै ७७ को कृषि गोसेवा संघ के उपाध्यक्ष तुलसीदास भाई विश्राम के नेतृत्व में संसदीय कॉंग्रेस पार्टी के नेता श्री यशवंतराव चव्हाणजी से मिला। उन्होंने आश्वासन दिया कि गोवध बंदी के विषय में कॉंग्रेस का पूरी तरह से समर्थन रहेगा। उन्होंने यह भी कहा कि आपका पत्र विधिवत् कॉंग्रेस पार्टी के समक्ष भी रखा जायेगा। और प्रदेश सरक़ारों से भी बात करने की कोशीस करेंगे। हाल ही में श्रीमती इंदिराजी गांधी का पवनार आगमन हुआ था। उस समय ता० २६ जुलै ७७ को उनसे मैं मिला। उनको तत्कालिन राज्य गृहमंत्री ओम मेहता के स्टेटमेंट की नकल एवं आपसी समझोते के कागद पत्र दिये। उन्होंने कहा इस संबंध में श्री यशवंतराव चव्हाण से मिलना ठीक रहेगा। विधिवत् वे ही कुछ कर सकेंगे। मैंने जब कहा कि उनसे मिल लिया हूं। उनकी सहानुभूति है। फिर भी इस संकल्प में आपकी

अखिल भारत कृषि गोसेवा संघ कार्यवाहक समिति का सभावृत्त

अ. भा. कृषि-गोसेवा संघ कार्यवाहक समिति की बैठक ता. २० जुलै १९७७ को दोपहर में ३ बजे गांधी शांति प्रतिष्ठान नई दिल्ली में आरंभ हुई। अध्यक्ष, उपाध्यक्ष की अनुपस्थिति में प्रो. शेरसिंगजी की अध्यक्षता में कार्यवाही आरंभ हुई।

पिछली ता. २८-६-७७ मुंबई बैठक की कारवाई पढकर, स्वीकृत की गई। मंत्री श्री. राधाकृष्णजी बजाज ने प्रारंभिक जानकारी दी।

प्रधानमंत्रीजी को दिया गया निवेदन और उनसे हुई बात-

प्रेरणा रही है इसलिए आपको विशेष रूप से प्रयत्न करना चाहिए तो उन्होंने कहा ठीक है।

अभितक यह प्रयत्न हुवे। आगे के लिए यह सोचा है कि कलकत्ते में मै स्वयं जा कर बैठूं और स्थानीय लोगों के सहयोग से प्रदेश सरकार से संपर्क करूं। केरल और गोवा में — श्री. रा. कृ. पाटील जायें और वहाँ की प्रदेश सरकारों से स्थानीय लोगों की सहयोग से वे संपर्क करें ऐसा सोचा है। पू. बावाने इस विचार को संमती दी है। पू. बाबा को सारी घटनाओं से पूरा परिचित रखा जाता है। संसदीय कृषि-गोसेवा मंच के संयोजक प्रो. शेरसिंगजी इस प्रयास में है कि इन प्रदेशों के मुख्य मंत्रियों से दिल्ली में मिलें। एवम् उनको उनकी राजधानियों में मिलने का समय मांगे व ससदीय डेप्युटेशन ले जावें।

राधाकृष्ण बजाज

चीत का सार कृषि-गोसेवा संघके भूतपूर्व अध्यक्ष डॉ. श्रीमन्नारायण-जीने बताया ।

(वह इसी अंक में पृष्ठ २९६ से ३०३ पर दिया गया है ।)

कृषि मंत्री से भेंट

प्रो. शेरसिंगजी ने कृषि मंत्री से हुई बातचीत का निम्न सार सुनाया । पशुखाद्यों का निर्यात बंद हो अैसी ही राय कृषि-मंत्रालय की पिछले कई वर्षों से है । वाणिज्य मंत्रालय पर जोर लगे तब यह काम हो सकता है ऐसा उन्होने बताया ।

दूध के भावों के बारे में तथा अन्य बातों के संबंध में मंत्रालय में बातचीत करके वे आवश्यक कारंवाई करेंगे । उनकी यह शिकायत थी कि द्वितीय, तृतिय योजनाओं में जो पैसा पशु-पालन के लिए मंजूर था वह प्रदेश सरकारों ने अन्यत्र लगाया ।

इस बैठक में जो प्रस्ताव पारित हुए है वे कुछ प्रधानमंत्रीजी को दिये गये निवेदन में आये है ।

उन प्रस्तावों के अलावा और निम्न लिखित प्रस्ताव कार्यवाहक समिति में पारीत हुए है —

गोसंवर्धनकौन्सिल

यह सुझाव आया कि केंद्रीय सरकार में खादी कमिशन की तरह का कोई संगठन होना चाहिये, जिस में सरकारी विशेषज्ञ और गोसेवक मिलकर पशुपालन के संबंध में राष्ट्रीय नीति तय कर सकें । तय हुवा कि सात सदस्यों की एक उपसमिति बनायी जाय और वह विस्तार से सुझाव पेश करें । इस समिति के सदस्य:— श्री० जयंतिलाल मानकर, संयोजक, (२) प्रो० शेरसिंगजी, (३) डॉ. श्रीमन्नारायणजी (४) श्री. राधाकृष्ण बजाज रहेंगे ।

अन्य तीन सदस्यों को कोऑप्ट करने का अधिकार इस समिति को दिया जाता है ।

सरकारी बजेट में गाय भैंस का स्वतंत्र स्थान हो ।

आजकल पंचवार्षिक योजनाओं में तथा सरकारी बजेटों में पशुपालन के नामपर जो खर्च रखा जाता है उसमें गाय, भैंस, भेंड, बकरी, सुअर, मच्छली, मुरगी आदि सभीका समावेश होता है। संघ की मांग है कि गाय, भैंस का एक स्वतंत्र मद कॅटल के नाम से हो ताकि गाय – भैंस की रक्कम भी उन्ही के लिए अलगसे रहे।

बँको से गायों के लिए ऋण मिले

छोटे किसानों को बँको से जो ऋण मिलता है वह अधिकतर भैंस के लिये मिलता है, गायों के लिये नही मिलता । होना यह चाहिये कि गायके लिये ऋण प्रथम मिले ।

गोशालोओं की जमीन और सीलिंग कानून

गोशालाओं की जमीने लँड सीलिंग कानून के अंतर्गत नही जानी चाहिये ऐसी संघ की राय है । आज देश में गोसदनों की जरूरत है, गोसदनों का कार्य ही गोशालायें कर रही है । अत: प्रदेश सरकारो से प्रार्थना की जाय कि गोशालाओं को लँड सीलिंग कानून से मुक्त रखा जाय । खबर मिली है कि इस वारे में कानपुर गोशाला के साथ जादती हुई है, तय हुआ की इसकी जांच की जाय ।

गोपविद्यालय :

सुझाव आया कि गोसेवक एवं गोपालकों के प्रशिक्षण की व्यवस्था होनी चाहिये । फिलहाल संघ के पास ऐसी कोई व्यवस्था

नही है। पहिले जितने भी प्रशिक्षण वर्ग चलते थे वे अधिकांश सरकार के सहयोग से चलते थे। तय हुवा कि गोपविद्यालयों के संबंध में क्या हो सकता है इस वारें में योजना वनायी जाय। इस संबंध में श्री. वनवारीलालजी चौधरी से और श्री परसाईजी से सलाह ली जाय।

गो-गोपाल यात्रा

श्री राधाकृष्णजी वजाज ने जानकारी दी कि, गांधी विद्या-मंदिर सरदार शहर के संस्थापक श्री कन्हैयालालजी दुगडने गोसेवा के निमित्त अेक भजन मंडली सहित सारे देशमें यात्रा करने के लिये स्वीकृति दी है। वे अत्यंत निष्ठावान सेवक है। राजस्थान में सबसे उत्तम गोशाला उनकी थी। वे परम गोभक्त और कृष्ण भक्त है। भगवद्‌गान करते हुवे गोसेवा के विचारों का प्रचार किया जाय, आध्यात्मिक साहित्य साथ रखा जाय, अेवम् गीता, भागवत, रामायण-पर प्रवचन हो ऐसी योजना है। इस योजनाका सदस्योंने हार्दिक स्वागत किया। तय हुआ कि इस योजना के लिये अेक मेटाडोअर गाडी और पंद्रह सौ रुपये मासिक खर्च का इंतजाम किया जाय। इस यात्रा का नाम गो-गोविंद यात्रा सुझाया गया था। सदस्यों ने गो-गोपाल यात्रा नाम पसंद किया। यह यात्रा ता. ११ सितं. ७७ से पू० विनोवाजी के आशिर्वाद लेकर पवनार-वर्धा से आरंभ होगी।
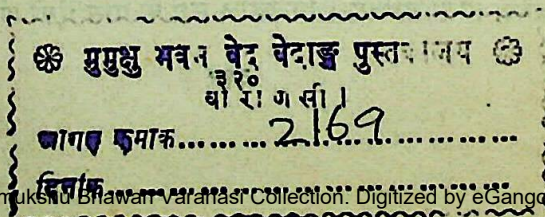
विनोबाजी का संदेश कर्म-मुक्ति के पूर्व

१. गोहत्याबंदी-संकल्पपूर्ति के लिए एक साल का समय दिया था। ११ सितंबर १९७७ को एक साल पूरा होगा। इस बीच गोसेवा पर पूरी शक्ति केंद्रित की जाय।

२. गोग्रास योजना के लाखों सदस्य बनें, ऐसी अपेक्षा है। उसके लिए सबको काम में लगना चाहिए।

अ – जितनी गोशालाएं, गोसदन या अन्य गोसेवा संबंधी संस्थाएं हैं, उनसे संबंधित सभी सज्जनों को गोग्रास-सदस्य बनना चाहिए।

आ – खादी का काम पचास हजार गांवों में है। उन सब गांवों में गोग्रास-सदस्य होने चाहिए। जिस ग्राम में स्थानिक सदस्य न हो, वहां खादी-संस्था स्वयं सदस्य बनें, ताकि, पत्रिका हर गांव में पहुंचती रहे।

इ – गो-प्रेमी एवं गाय की सेवा लेनेवाला हर परिवार सदस्य बनें।

ई – सर्वोदय समाज के सभी सेवक स्वयं गोग्रास-सदस्य बनें एवं घर-घर सदस्य बनावें। ११ सितंबर १९७७ तक का समय और शक्ति गोसेवा कार्य में केंद्रित की जायेगी तो कोई ठोस परिणाम निकल सकेगा।

उ – बहनों के संगठनों को तथा बहनों को विशेष रूप से गोग्रास-सदस्य बनाने का काम करना चाहिए।

३. गोदुग्ध प्रचार – अपने अपने घरों में गाय का दूध अधिक से अधिक इस्तेमाल करने के लिए सामूहिक संकल्प लिया जाय।

४. गांवों में ग्राम-सभाएं गठित करके उनके द्वारा गोसदन कायम किये जावें। हर गांव में कृषि-गोसेवा, खादी-ग्रामोद्योग, नई-तालीम, व्यसन-मुक्ति और अदालत-मुक्ति सबका संमिलित सहयोग लेकर ग्रामों का उत्थान किया जाये।

२४-१२-१९७६

बाबा की शुभकामना

राम हरी